100 Years of Hindustan Times

The Hindustan Times has been a significant force in Indian journalism and public life for 100 years, evolving from its origins in the freedom struggle to become a leading voice in contemporary media. Launched on September 15, 1924, the newspaper's inception was closely tied to India's anti-colonial and social reform movements. Amidst the political turbulence of early 20th-century India, the Gurudwara Reform Movement aimed to remove corrupt priests loyal to the British, leading to peaceful protests by the Akalis which were violently suppressed. In response, a group of Akalis including Sunder Singh Lyallpuri, Tej Singh Samundri and Sardar Mangal Singh saw the need for a newspaper to amplify their message.

Mahatma Gandhi inaugurated The Hindustan Times and selected K.M. Panikkar as its editor. Gandhi's advice to Panikkar emphasized the importance of honesty and transparency, a principle that remains a cornerstone of the newspaper's ethos. The early years were challenging, with the paper struggling financially. Pandit Madan Mohan Malaviya provided crucial support by borrowing Rs 40,000 from Punjab National Bank, chaired by Lala Lajpat Rai to cover debts. By 1927, the newspaper was restructured into a limited liability company with Pandit Madan Mohan Malaviya on the board and Ghanshyam Das Birla, a key supporter of Gandhi, as a major shareholder.

By 1930, The Hindustan Times had made significant strides with a circulation of nearly 30,000 copies reaching readers across Punjab, Uttar Pradesh and Rajasthan. However, the colonial government imposed strict press laws, often penalizing newspapers for their content. During the Quit India movement in August 1942, The Hindustan Times voluntarily ceased operations for four months in protest against these restrictions.

The newspaper was not only a nationalist platform but also a voice for an emerging nation. It launched its Hindi sister publication, Hindustan, in 1936, broadening its impact. The newspaper featured writings by eminent figures such as Motilal Nehru, Maulana Mohammed Ali and Jawaharlal Nehru in its first issue. Over time, it published influential works, including Gandhi's autobiography, *My Experiments With Truth* and contributions from international figures like Eleanor Roosevelt and Dr. Martin Luther King Jr. The Hindustan Times was also known for its distinguished journalists including cartoonist K. Shankar Pillai, reporter Durga Das and editor Pothan Joseph. Devdas Gandhi, Mahatma Gandhi's third son served as managing editor from 1937 to 1957, contributing significantly to the newspaper's development.

Following India's independence in 1947, The Hindustan Times faced the task of navigating a new and complex political landscape. The violence of Partition and the assassination of Gandhi were profound challenges. Despite these difficulties, the newspaper remained committed to supporting and shaping the nation. It played a role in nation-building, raising funds for soldiers, reporting on the lives of ordinary Indians and pioneering pictorial storytelling through photojournalism. Its editorials were candid and critical, reflecting the concerns of a young Republic.

Under the guidance of the Birla family, the newspaper continued to adapt and grow. Krishna Kumar Birla who succeeded his father G.D. Birla in 1957, expanded the newspaper's reach and launched new publications such as the tabloid "*Morning Echo*", the children's magazine "*Nandan*" and the literary magazine "*Kadambini*" in Hindi. Despite these expansions, the focus on nationalism remained central to The Hindustan Times.

In the late 20th and early 21st centuries, The Hindustan Times embraced modernity with Shobhana Bhartia, Krishna Kumar Birla's daughter, leading the newspaper into the digital age. Under her leadership, the newspaper launched new city editions, invested in its online presence and introduced lifestyle products like "*HT Brunch*" and "*HT City*". The Hindustan Times also initiated the Hindustan Times Leadership Summit (HTLS) in 2003, an annual event that gathers global leaders and thinkers to discuss important issues.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp celebrating 100 years of The Hindustan Times. Over the past century, The Hindustan Times has steadfastly upheld its role as a significant voice in national discourse. Reflecting the vision of its founders, the newspaper has navigated a century of change while remaining true to the principles of integrity and commitment that have guided it from its inception. This commemorative stamp honors the newspaper's enduring legacy and its contribution to shaping India's media landscape.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by the proponent

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



हिन्दुस्तान टाइम्स के 100 वर्ष
100 YEARS OF HINDUSTAN TIMES

विवरणिका BROCHURE

हिंदुस्तान टाइम्स के 100 वर्ष

हिंदुस्तान टाइम्स की स्थापना स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हुई। तब से लेकर अब तक पिछले 100 वर्ष से यह समाचार पत्र भारतीय पत्रकारिता और सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और समकालीन मीडिया में खबरों और निष्पक्ष विचारोत्तेजक लेखों की वजह से एक महत्वपूर्ण आवाज बनकर उभरा। इस समाचार पत्र के प्रकाशन की शुरूआत 15 सितंबर, 1924 को भारत के उपनिवेशवाद विरोधी एवं सामाजिक सुधार आंदोलन के समय में हुई। 20वीं सदी के पूर्वार्ध में भारत में हो रही राजनीतिक उथल–पुथल के बीच, अंग्रेजों के प्रति वफादार भ्रष्ट धर्माचारियों को हटाने के उद्देश्य से अकालियों ने 'गुरुद्वारा सुधार आंदोलन' के अंतर्गत शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया जिसका दमन हिंसक रूप से कर दिया गया था। इसके जवाब में, सुंदर सिंह लायलपुरी, तेज सिंह समुंद्री और सरदार मंगल सिंह सहित तमाम अकालियों के एक समूह ने अपनी बात को जन जन तक पहुंचाने के लिए एक समाचार पत्र की आवश्यकता महसूस की।

हिंदुस्तान टाइम्स का शुभारंभ महात्मा गांधी के कर कमलों से हुआ था और उन्होंने के.एम. पणिक्कर को इसका संपादक चुना। गांधी ने ईमानदारी और पारदर्शिता के महत्व पर बल देते हुए पणिक्कर को जो सुझाव प्रदान किए, वे आज भी समाचार पत्रों के चरित्र का आधार हैं। आर्थिक समस्याओं के कारण इस समाचार पत्र के शुरुआती वर्ष चुनौतीपूर्ण रहे। पंडित मदन मोहन मालवीय ने इसके कर्जे को चुकाने के लिए लाला लाजपत राय की गवर्नरशिप वाले पंजाब नेशनल बैंक से 40,000 रुपये उधार लेकर महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। वर्ष 1927 आते–आते इस पत्र को 'लिमिटेड देयता कंपनी' के रूप में पुनर्गठित कर दिया गया, और इसके बोर्ड में पंडित मदन मोहन मालवीय तथा गांधी जी के खास सहयोगी घनश्याम दास बिड़ला को एक प्रमुख शेयरधारक के रूप में सम्मिलित किया गया।

वर्ष 1930 तक, हिंदुस्तान टाइम्स काफी प्रगति कर चुका था। समस्त पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में इस पत्र की लगभग 30,000 प्रतियाँ पाठकों तक पहुँच रही थीं। तथापि, औपनिवेशिक सरकार ने सख्त प्रेस कानून लागू कर दिए और समाचार पत्रों पर उनकी प्रकाशित सामग्री के लिए अक्सर दंडित किया जाता रहा। अगस्त, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, हिंदुस्तान टाइम्स ने इन प्रतिबंधों के विरोध में चार महीने तक स्वेच्छा से अपने प्रकाशन को बंद कर दिया।

यह समाचार पत्र न केवल एक राष्ट्रवादी मंच था, बल्कि एक उभरते राष्ट्र की आवाज भी था। वर्ष 1936 में हिंदुस्तान टाइम्स ने अपना विस्तार करते हुए हिंदी में अपना एक सहयोगी अखबार 'हिंदुस्तान' शुरू किया, इससे समाचार पत्र का फलक और भी व्यापक हो गया। अख़बार ने अपने पहले अंक में मोतीलाल नेहरू, मौलाना मोहम्मद अली और जवाहरलाल नेहरू जैसी प्रतिष्ठित हस्तियों के लेख प्रकाशित किए। इसके बाद की अवधि में भी गांधी की आत्मकथा– सत्य के साथ मेरे प्रयोग और एलेनोर रूजवेल्ट तथा डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसी अंतरराष्ट्रीय हस्तियों के लेखों सहित तमाम प्रभावशाली शख्सियतों की रचनाएं भी प्रकाशित कीं। हिंदुस्तान टाइम्स अपने प्रतिष्ठित पत्रकारों के लिए भी जाना जाता रहा जिनमें कार्टूनिस्ट के.शंकर पिल्लई, रिपोर्टर दुर्गा दास और संपादक पोथन जोसेफ शामिल थे। महात्मा गांधी के तीसरे बेटे देवदास गांधी ने वर्ष 1937 से 1957 तक समाचार पत्र के प्रबंध संपादक के रूप में कार्य किया और इस समाचार पत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, हिंदुस्तान टाइम्स को एक नए और जटिल एवं पेचीदे राजनीतिक परिदृश्य से गुजरना पड़ा। विभाजन से उपजी हिंसा और गांधी जी की हत्या जैसी विकट चुनौतियां उठ खड़ी हुईं। किन्तु इन सब कठिनाइयों के बावजूद, यह समाचार पत्र देश के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने और उसे सही दिशा दिखाने के प्रति प्रतिबद्ध रहा। हिंदुस्तान टाइम्स ने राष्ट्र निर्माण संबंधी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए और सैनिकों के लिए धन जुटाने, आम भारतीयों के जीवन से जुड़ी हुई रिपोर्टिंग करने, फोटो पत्रकारिता के माध्यम से विविधतापूर्ण समाचारों और कथाओं को सचित्र प्रस्तुत करने की कला में नए प्रतिमान गढ़े। समाचार पत्र के संपादकीय स्पष्ट, निष्पक्ष और आलोचनात्मक रहे, जो इस नवगठित गणराज्य की चिंताओं और सरोकारों को दर्शाने का काम करते थे।

बिड़ला परिवार के मार्गदर्शन में इस समाचार पत्र ने खुद को ढालना और विकसित करना जारी रखा। वर्ष 1957 में, जी डी बिड़ला के उत्तराधिकारी के रूप में कृष्ण कुमार बिड़ला ने समाचार पत्र की पहुंच को और अधिक व्यापक बनाते हुए टैब्लॉयड मॉर्निंग ईको, हिंदी में बाल पत्रिका 'नंदन' और साहित्यिक पत्रिका 'कांदम्बिनी' जैसे नए प्रकाशन आरंभ किए। इन विस्तारों के बावजूद, राष्ट्रवाद सदैव ही हिंदुस्तान टाइम्स के केन्द्र में रहा।

20वीं सदी के अंतिम दशकों में और 21वीं सदी के शुरूआती वर्षों में, कृष्ण कुमार बिड़ला की सुपुत्री शोभना भरतिया के नेतृत्व में आधुनिकता के साथ कदमताल करते हुए 'द हिंदुस्तान टाइम्स' ने डिजिटल युग में प्रवेश किया। उनके नेतृत्व में समाचार पत्र ने नए सिटी संस्करण लॉन्च किए, अपने ऑनलाइन उत्पादों में निवेश किया और आधुनिक जीवनशैली पर आधारित 'एचटी ब्रंच' और 'एचटी सिटी' जैसे नए परिशिष्टों और नए फीचर्स के साथ समाचार पत्र को पाठकों के समक्ष पेश किया। वर्ष 2003 में हिंदुस्तान टाइम्स ने 'हिंदुस्तान टाइम्स लीडरशिप समिट (एचटीएलएस) का भी शुभारंभ किया। इस वार्षिक समिट में वैश्विक नेता और विचारक एवं चिंतक महत्वपूर्ण मुद्दों पर संवाद करने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं।

डाक विभाग 'हिंदुस्तान टाइम्स' के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरवान्वित महसुस करता है। पिछले 100 वर्षों में, हिंदुस्तान टाइम्स ने राष्ट्रीय विमर्श में एक बुलंद आवाज के रूप में अपनी भूमिका को दृढ़ता से कायम रखा है। अपने संस्थापकों के दृष्टिकोण के अनुरूप, इस समाचार पत्र ने अपने आरंभ के दिनों से ही सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और प्रतिबद्धता के सिद्धांतों पर अटल रहते हुए, तमाम उतार–चढ़ावों और बदलाओं से भरी एक शानदार शताब्दी पूरी की है। यह स्मारक डाक टिकट इस समाचार पत्र की चिरस्थायी विरासत और भारत के मीडिया–परिदृश्य को आकार देने में इसके योगदान के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 3,03,120
Stamps Printed	: 3,03,120
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00